

1. ज्ञानिय डिग्री उत्तम काशाक बुल ?
 → कोना काशाक उत्तम ज्ञानिय डिग्री रहे, सेटा—

 - ① मातृ भूमि एकत्र आपादन वा ऐसे अधिक काम अपादन कर्त्तव्य आवाहन—।
 - ② मा ज्ञाने पाओमा मासु !
 - ③ मातृ ज्ञानकन परिवर्तन ज्ञानात्मा !
 - ④ मा ज्ञानकन कम अवृत्त आपाक्षेप !

2. हेल्प आलानी कोनाटि ?
 → हेल्प आलानी इल :

 - ① मे जय आलानी थोके डेक्कि परिवार्ता आपक्षेप की पापमा अद्वितीय !
 - ② मे आलानी कम परिवार्ता धेमा डुप्पने काय !
 - ③ मे आलानी ज्ञानेन्द्रि अथ० ज्ञानकन = परिवर्तन ज्ञानात्मा !

3. हाताकाट पकड़े आज गृहन क्याहु उत्तम सदि मे कोनो उत्तमिय उत्तम गृहन आकू, दूसि कोने प्रकाश्यूष्य खेजि डाल्हाहु क्याहु निवां केन ?
 → आज गृहने क्याहु उत्त LPG उत्ताहु कर्हिये। कावून LPG अू आपत्तिज्ञ डेक्कि आकू, दूसि अधिक आप डुप्पने इस, अद्वितीय कम घृण अथ० उपर्युक्त द्वितीय उत्तम आकू।

प्रामुख्य वास्तुकल्पे अर्थन लाभिक कार्ये लाभिक सूची भेद उल्लेख है। वर्तमान वास्तुकलिकि भेद पिछले उपाधन कर्या है। वास्तुकल्पे अर्थन वृहदाक्षण्य पिछले प्रामाण्य ज्ञाता। एक चट्ठे अस्त्रे लापन कर्या है। पिछले उपाधने उल्लेख वास्तुकल्पे इर्द्दीन लाभिक जाहामे पिछले उपाधने उपवार्षीन योगाना है। एकक वास्तुकल्पे द्वारा उपाधने विशेष प्रविधान कर्या है। विषेश अकल डूड़े आपके वास्तुकल लापन कर्या है। अत्रिकल वास्तुकल द्वारा उपन्न पिछले एकादश कार्य वानिकीक लावे व्यवहार योग्य कर्या है।

उल्लेखिकि : ज्ञापिछले उपाधन ज्ञाने परिवर्तनील ज्ञाने प्रितिक्षेपिकि के पिछले लक्षित कर्या है। किन्तु प्रितिक्षेपिकि उल्लेख विलाप व्यवहारयोग्य अलप्रभावज्ञ ज्ञाने आते नहीं। ज्ञाने विधि देवमा अकले अलप्रियते एकल ग्राहक रहेंगे। ज्ञाने विधि उपाधने अन्य नदीजे आते उच्च विधि निर्वान कर्या है। अलप्रियते उपाधने अन्य नदीजे आते उच्च विधि निर्वान कर्या है। अलप्रभाव वाणीय उच्चि कर्या है। एवं विज्ञानाकाम अलाङ्कार में ज्ञाने अल जाति कर्या है। एवं प्रदृष्टिकृत अवास्थि अलवृ लाभिकलिकि के प्रितिक्षेपिकि कर्या है। विधि एवं उच्चल्पयोग्य उल्लेख नलिन जाहामे विधि नीचे प्राप्ति उपवार्षीने उलित कर्या है।

प्रश्नावली : 3

X 2. अन्त भेदक ज्ञानशील लाभिक वीक्षावक्ता की की?

→ अन्त भेदक उपाधन लाभिक आश्वल कर्या है। मुद्रन :- गोप्यारु लेखि, उपर्युक्त लेखि एवं गवाहार्द्देव आपर्वन्नकि। अर्थव्यवहारिकि वीक्षावक्ता अलि शुला।
 ① ज्ञानशील अलप्रस्त्रेष्टे उठा-नामाय प्रार्थक्यु उल्लेख आव्याप्ति गोप्यारु उच्चि लेखि भेदक भाकि। ज्ञानशील निर्वान फोनो अक्षीन अलज्ञात्पृ उपर्युक्त विधि द्वितीय ज्ञाने उच्चिकृत काते नामाना अनुकूलि अर्थकृप विधि-निर्वान प्राप्ति वीक्षित,
 ② ज्ञानशील मे शद आश्वल भ्रमल उपर्युक्त उच्चि हूम क्रेलन्त्राम ज्ञाने अकल छाने उपर्युक्ति भेदक पिछले उपाधन कर्या मुद्रते प्राप्ति।
 ③ ज्ञानशील आपर्वन्नकि भेदक उपर्युक्त उपाधने मापेष्ट अक्षावना भाका लाल औ लोटी आश्वल कर्या आते व्यवहारिक।

X 3. द्वि-आप लाभि बलित की दुर्लभ ?

→ द्वि-प्रत्येष्ट अलद्विष्ट आवाक आश्वल भाका लालप्राप्ति ज्ञानप्राप्ति आज्ञा उलिम्बयाम्ब इर्षित प्रात्मा लाभिकृत द्वि-आप लाभिकि वाल। निर्विल्लाल एवं आन्त्रिकिम् किन्तु ज्ञाने द्वि-आप लाभिकि किन्ति-पिछले उपाधन उपर्युक्त उपर्युक्ति।

4. गिर्लीस डेफिन डेफिन्यू व्हाइर्ड्सन कि कि?

→ मिल्लिन अक्षिमात्र शैर्जनिमात्रात्रु प्रवृत्तिरु भेदक तिथिति निर्दिकीमु छलजित्य
प्रविन्नान कम्पलात्रु कार्यन प्रवृत्तिरु दश्वतेषु कला द्विधाति छलजित्य आमु
10 मिल्लिन छल आदिकि । यिहुः उपमान बोक्ते यित्तिस्त्राय निर्दिति निर्दिकीमु
विट्टिकट्टोत्रु एर्ह निर्दिकीमु द्वालानी व्यवश्य कठा इस्त । विट्टिकट्टोत्रु एर्ह द्वालानी
व्युधमत यिक्किमात्र निमुक्तन सेष्य शोष निर्दिकीमु छलजिति उपम्भ कात्रु । एर्ह तिथिति
निर्दिकीमु छलजित्य जायमु । जलक्ते द्वाष्ट प्रविन्नि ति कात्रु यिहुः उपमान कठा इस्त

प्रश्नावली :- 4

X¹. किनारा छाड़िये द्वितीय दूसरामुख शब्द प्राप्त किये। केन वा किन नम् ?

→ या, किंतु किंतु त्वयि रूपानि उपर्युक्त दृश्यमान इति पाप्ति । मेनः—
गोविष्णवि, गोविष्णवि अथ० गोविष्णवि ग्रामा गोविष्णवि । एवं द्विद्वयात् लाभ
वाप्तु प्रदृष्टव कन्त इम् ।

Q. दृढ़कर्त्ता घालनी शिळाते हार्षिकाते व्यवस्था कृता अम्। एक CNG गेहुकि परिषिक्षा
घालनी बाटु यस्तु कि? द्रुत या क्रीत नम्?

→ CNG-ইঞ্জিনে পাইকুন দ্বারা কার্বন ইণ্ডিজেন দূরে কার্বন
ডেক্সাইপার হয়ে না। কিন্তু CNG তে ক্লিপন গ্যাশ মাঝে এবং ইঞ্জিনে
কলে তে গ্যাশ উপর হয় এবং বাষ্প অবসর হয়।

प्रश्नावली ५

~~1. ইছুটি নবীকৃতামোগ্য শাকিতু উৎসের নাম বন্ধ। গোমাহ পজ্জন্তু কাৰণ
ব্যাখ্যা কৰা।~~

→ ପ୍ରେଟି ଅୟକରୁ ଗମାଗ୍ୟ) — ଶାନ୍ତିରୁ ଡିଙ୍ଗ ରୁଲ — ବାନୁରାଜି, ଶୋବଶୋଭି । ଏଗନ୍ତି
ଅର୍ଥ ଉତ୍ସନ୍ଧାଳୀ ଆମାଦୁଇ ପ୍ରକାଶିତ ପାଞ୍ଚମୀ ମାତ୍ର ଅଧିକାରୀ ଏହି ଶାନ୍ତିରୁଠି
ଆନନ୍ଦପୂର୍ଣ୍ଣ ମୋଶାନ କେବୁନୋ ନା କୋଣ ଆହୁ ଅଧାରିତ ଭାବେ ।

১০. মুক্তি নিশ্চিয়সমোগ্য আনু শাস্তি-উপর নাম কৃত। তোমার পদলেও কথা কোথা।

→ মুটি বিষ্ণুসিতি প্রাপ্ত হোজুরি গুপ্ত অঞ্চল—বগুলা পুরু প্রদোলিমুন। এই
হোজুরি গুপ্তি পুরুৎ নথীকৃত মোগু জন্ম। এই জ্বালালী গুপ্তা প্রাপ্ত কো
বংশে আবু উপতি রম্যেছিল অবু এবং অর্হণ্মুলা—প্রস্তুতেন্দু প্রলভাস অধিক

—ଅଭ୍ୟାସ ଅତି ଶୀମିତ । ଅର୍ଥାତ୍ ଏହି ଇମ୍ବନଙ୍ଗୁଳା ଅଧିକ ବ୍ୟକ୍ଷାୟ କାହିଁଲେ ନିଃମୁଖେ ଫୁଲ୍ମୁଖୁ
ଅନ୍ତର୍ଭାବରେ ଥାଏ ।

पानुष्णीनी

১. গৃহের ভালুক অন্য জোড়া - আল উপাপক সঙ্গে ব্রহ্মণ করা মানু না -
 → ⑥ মেঘলা দিনে ।

২. নিষ্ঠালিপিত কোনটি টেব ছে ঝুঁকিয়ে উঁচু নম -
 ⑦ নিষ্ঠাকীসু ঝাঙ্কি ।

৩. নিষ্ঠালিপিত কোন উঁচু আগুলো গৌমুণ্ডাঙ্কি - মেঘ শীঁও শুশীত নম -
 → ⑧ এ- আপ ঝাঙ্কি ।

৪. জীৱঞ্চ দ্বালানী এবং প্রতিক গৌমুণ্ডাঙ্কি তুলনা ও পার্শ্বিক লিখিয়া ?
 → জীৱঞ্চ দ্বালানী অনৰীকৃত মোগ্য, ঈশ্বা প্রদূষণ ঝুঁকি কৃত এবং অধিক ব্রহ্মণাপক, আধুনিক গৌমুণ্ডাঙ্কি নৰীকৃতাসূচ্য, ঈশ্বা প্রদূষণ ঝুঁকি কৃত না কিন্তু আধুন কৃতকৃত।

৫. ঝাঙ্কিয়ে উঁচু দ্বিজাবে, টেস- ছে এবং ডালবিহুত ঝাঙ্কিয়ে তুলনা কৃত এবং পার্শ্বিক লিখিয়া
 → জেবছে :- এই ঝাঙ্কি উপাদানের অন্য দ্বিজে অবৃচ্ছ হনু না। ঈশ্বা দ্বন্দ্ব অন্তরে আনক দ্বিজে এবং এটি একটি উঁচু দ্বালানী কিন্তু ঈশ্বা মেঘ বাস্তু প্রদূষণ হনু ।

জনপিত্রিত :- এই ঝাঙ্কিয়ে উপাদান অধিক ব্রহ্মণাপক।
 দ্বালবিহু দিয়ে জীবিত প্রাণীর ঈশ্বা উপাদান ন্যূনে হনু। কিন্তু ঈশ্বা নৰীকৃতব্রহ্মণা
 ঝাঙ্কিয়ে উঁচু, অবৃচ্ছ বাস্তু প্রদূষণ হনু না।

৬. নিষ্ঠালিপিত উঁচু মেঘ ঝাঙ্কি উপাদানে জীবাণুতা কি ?

× ⑨ বাস্তু × ⑩ অবৃচ্ছ × ⑪ গোমুণ্ড - জীব

Ans :- ⑨ বাস্তু :- বাস্তু ঝাঙ্কি ব্রহ্মণের ক্ষেত্রে আনক জীবাণুতা আছে। প্রয়োগে
 বাস্তু ঝাঙ্কি সার্ব কেবলমাত্র জৈর্বশকল প্লান প্রাপন করা মানু মেঘানু ঝুঁকিয়ে
 অধিকাঠ ডেখ অবস্থ বাস্তু প্রয়োগ আট প্রাক। টাবুবার্ষিকু ঝুর্ণুর প্রস্তোভীসু বেশ বেশ
 গোমুণ্ড অন্য বাস্তু প্রয়োগে প্রতি অর্ণাসু ১৫ কিলো অধিক রুমু প্রাপ্যাজন।

⑩ অবৃচ্ছ :- জীবাণুত্ব উপর দিয়ে অবল বাস্তু প্রয়োগে সাজে ত্বরিত ঝুঁকি হনু
 মে অব আশঙ্কা অবল অবল অবৃচ্ছ ঝুঁকি হনু ক্রেলগুপ্ত জৈর্বশকল প্লান অবপু
 ঝাঙ্কি মেঘ দিয়ে উপাদান করা মেতে প্রাক। টাবুবার্ষিকু ঝুর্ণু- ঝুর্ণু কাজে
 অবৃচ্ছ ঝাঙ্কি ব্রহ্মণের অন্য অবল অবকাশে কৌশল অবলশ্বিন করা হনু অবগত
 দিয়ে উপাদান ন্যূনে হনু।

③ शोमावृ ऐटो :- शोमावृ जलपूर्णत्वे ईर्षा नामावृ पर्याप्तिः अन्त आवृत्ता शोमावृ ऐटो छेति शेषे अकिञ्च। शोमावृ विकर्त्तव्ये द्वारा अपूर्वी जलजातिः उपर्युक्त वैष्णव शिष्ट शोमावृ ऐटो उपर्युक्त काले साधाना हम्। वैष्णव उपर्युक्त प्रथा जलय शोमावृ ऊर्ध्वार्द्धे शुष्टिः शोमावृ ऐटो उपर्युक्त विहृते द्वापात्रिः किञ्च अश्विप वाँचिते शान शीघ्रिते।

* ७. किंशु शिष्टिः निश्चलिष्ठिः शेति उपूर्व अन्तर्द्वये शेषी विभागेन कर्त्तव्यः?

@ नवीकरुण मोग्य एवं अव्यवहारावान आवृत्ता छेति उपूर्व।

→ मे अकल शिष्टिः उपूर्वत्वे शेषे हम् ना एवं अनवद्युत शिष्टिः मूलान द्विते पात्र, अद्वितीय नवीकरुण मोग्य शिष्टिः उपूर्व नाल। मेननः:- अलवधिः, शोषुक्तिः, शिष्टिः इत्यादि।

मे अकल शिष्टिः उपूर्वत्वे शेषात् शीघ्रिते, शेषे हमे त्राल आवृ शेषी कर्त्ता मास्त ना, अद्वितीय अनवीकरुण मोग्य शिष्टिः उपूर्व वल। मेननः:- कमुला एवं प्रेतोलिम्बाम इत्यादि।

* ८. निःश्वस मोग्य एवं अनिःश्वस मोग्य शेति- उपूर्व?

→ मे अकल शिष्टिः उपूर्व अत्याधिक वृथात् कमुले निःश्वस हम् माओम्बावृ अन्तर्वाना भावृ, शेषालाक निःश्वस मोग्य शेति उपूर्व वल। मेननः:- कमुला, अनिःश्वस मोग्य इत्यादि।

मे अकल शिष्टिः उपूर्व अन्तर्वाना वृथात् कमुले निःश्वस हम् माओम्बावृ अन्तर्वाना भावृ ना, शेषालाक अनिःश्वस मोग्य शेति उपूर्व वल। मेननः:- शोषुक्तिः, वासुक्तिः इत्यादि।

* ९. आद्वित शेति उपूर्वे किं क्षेत्रान्तर्वान भावा प्रस्त्रात्मनः?

→ एव द्वार्चिते प्रथम अस्त्रे देहो।

* १०. शोषुक्तिः शुष्टिः ओ अनुविद्या लिपियत् कर्त्ता। क्षेत्र अप्तुल शोषुक्तिः वृक्तात् वृथात् शीघ्रिते?

→ शोषुक्तिः वृथात् शुष्टिः अनुविद्यात्तिः इत्तोः-

① इशा शास्त्रे एवं अद्वितीय शास्त्री।

② शोषुक्तिः वृथात् शोषा इन्द्रनेत्रे प्रस्त्रात्मन धम् ना;

③ इशा वृथन कर्त्ता ओ वृथात् कर्त्ता शुष्टिः अनक।

④ इशात् कर्त्ता अप्तुल शास्त्रा कर्त्ता मास्त।

ଶୌଭ୍ୟକୁଳ ବ୍ୟଥାବ୍ୟ ଅନୁର୍ଧ୍ୱିତ୍ତିଲି ହଜାଃ-

- ① ଈଶା ମୁଁ ଦୀର୍ଘ ଦିନ ହୁଏ ଏବଂ ବାଲା କହୁଣ୍ଡ ଆଜିକ ଅନ୍ତର୍ମୁ ନାହିଁ ।
- ② ଶୌଭ୍ୟକୁଳାବ୍ୟ କୁଳ ଈକ୍ଷନ ହଜା ଶୌଭ୍ୟଙ୍କି, କିନ୍ତୁ ଏହି ଈକ୍ଷନ ହୁଏ ଦିନେ ବେଳେ ପାଞ୍ଚମୁ ମାସୁ ।
- ③ ମେ ଜୟ ଅକ୍ଷତ ଆକାଶ ବେଶିପୁଣୀ ଅନ୍ତର୍ମୁ ମେଘାଛନ୍ତି ମାତ୍ର, ଯେ ତାର ଅଥବା ଶୌଭ୍ୟକୁଳାବ୍ୟ ବ୍ୟଥାବ୍ୟ ଜୀବିତ ।
- 10. ଝାଇକୁ ବାରିତ ଚାହିଁବୁ ପରିବର୍ଷର ଅଭାବ କି । ଝାଇକୁ ବ୍ୟଥାବ୍ୟ ଦ୍ରାଶୁ କହୁଣ୍ଡ ତାଙ୍କ କି କି ଉପାୟ ଅଫଳକୁଳ କହା ମେତେ ମାସୁ ।
→ କୋଣା ନା କୋଣା ଆଖେ ମେ କୋଣା ଝାଇକୁ ଉପାୟ ବ୍ୟଥାବ୍ୟ କୁଳ ପାର୍ଯ୍ୟକୁଳାବ୍ୟ ଉପାୟ ବିକ୍ରିପ ଅଭିଭିତ୍ତିମ୍ଭା ପରିବର୍ଷକିତ ହୁଏ । ତୀରଙ୍ଗ୍ନ ପ୍ରାଳାନୀ ଦ୍ଵାନେବୁ କୁଳ ବାସୁ ପ୍ରଚୁମିତ ହୁଏ, ଶୌଭ୍ୟକୁଳାବ୍ୟ ଅତେ କୋଣାଲ ଦ୍ରସନମୁକ୍ତ ଅଜେତ ଈଶା ପାର୍ଯ୍ୟକୁଳାବ୍ୟ ଝାଇକୁ ଗ୍ରହିତ କରେ ।
ଝାଇକୁ ବ୍ୟଥାବ୍ୟ ଶୁଣ କହୁଣ୍ଡ ଅନ୍ତର୍ମୁ ନିଜାଲିଏତି ଉପାୟକୁଳାବ୍ୟ ଅଫଳକୁଳ କହା ମେତେ ମାସୁ । ଝାଇକୁ ବ୍ୟଥାବ୍ୟକି ଦ୍ରାଶୁ ଉପାୟ ଓ ଦ୍ଵାନତତ୍ତ୍ଵ ଝାଇକୁ ଉପାୟ ନିଜାନ କହୁଣ୍ଡ ହେଉ । ଶୌଭ୍ୟଙ୍କି, ବାସୁ ଝାଇକୁ ଏବଂ ତେବେ ଈକ୍ଷନ ଈତ୍ତାଦି ବିକିଳ ଝାଇକୁ ଉପାୟ ବ୍ୟଥାବ୍ୟ ଉପାୟ ହୁଏବୁ ଦିତେ ଥିବେ ।

Extra Questions
~~~~~

- X 1. ନିର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଟ ଝାଇକୁ ଝାଇକୁଳ ଦିକ୍ଷିତାଲୋ ଉପାୟ କହା ।  
→ ନିର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଟ ଝାଇକୁ ଉପାୟକୁଳ ଅଭିଭିତ୍ତି ଗ୍ରହିତ ବର୍ତ୍ତମାନରେ ଝାଇକୁଳ  
ଓ ଅଭିଭିତ୍ତି, କାମନ ପ୍ରାଳାନୀ ଶିଳ୍ପୀର ବ୍ୟଥାବ୍ୟ ଉପାୟ ଉପାୟକୁଳାବ୍ୟ ଅଭିଭିତ୍ତି ମେତେ କାମ  
ପ୍ରକିମ୍ବାଣାତ ଝାଇକୁ ପରିବର୍ଷ ଶର୍କରା କହୁଣ୍ଡ ବିକିଳ ଅଭିଭିତ୍ତି ମାତ୍ର । ନିର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଟ ବର୍ତ୍ତ  
ମାନରେ ଝାଇକୁଳ ଓ ଅଭିଭିତ୍ତି ଝାଇକୁଳାବ୍ୟକି କହା ନା ହୁଲ ପରିବର୍ଷ ଅଭିଭିତ୍ତି ଅଛି ।  
ଉପରୁଷ ଆକାଶିକ କୋଣା ଛିପାଇ ନିର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଟ ତେଜିକୁଳାବ୍ୟ ବିକିଳାବ୍ୟ ହରିତନାର୍ଥ ଶର୍କରାବାତା  
ମାତ୍ର ।

- X 2. ଶୁଣିବା କି ?  
→ ଶୁଣିବା ପରିବର୍ଷକୁ କୁଳ ଏ-ପ୍ରତ୍ୟେ ଅଭିଭିତ୍ତି ଏକ ଆକାଶ ଶଳିତ ଝାଇକୁ  
ଉପରୁଷ ହେଉ । ଏହି ଶଳିତ ଝାଇକୁ ଉପରୁଷକି ଧିବିତ ହୁଏ କିମ୍ବା ନିର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଟ ଅଭିଭିତ୍ତି  
ଏ-ପ୍ରତ୍ୟେ ଅଲାଦାନ ଆବଶ୍ୟକ ଅଭିଭିତ୍ତି ମାତ୍ର । ଏମନ ପ୍ରାଳାନୀ ଶୁଣିବା କହା ।

3. ଶୌଭ୍ୟ ମୁଦ୍ରା ଶୁଣିବା ବୁ ବ୍ୟଥାବ୍ୟକି ଉପାୟ କହା ।  
→ ବୁଝୁ ଝାଇକୁଳ ଶୌଭ୍ୟକୁଳ ଅଭିଭିତ୍ତି ଶୌଭ୍ୟକାମ ପରିବର୍ଷ ନିଜକ ମାନିକ ବ୍ୟଥାବ୍ୟ ଦ୍ଵାରା  
ବ୍ୟଥାବ୍ୟକି ଅଭିଭିତ୍ତି ଅନ୍ତର୍ମୁ ମାର୍ପିଲ ପରିବର୍ଷ ବିକିଳ ଉପରୁଷକୁଳ କହା ମାତ୍ର । ଆତି କୋଣା ତେଜିକୁଳ  
ଝାଇକୁଳ ମାତ୍ର ନା, ଉପରୁଷକୁଳାବ୍ୟ ତେବେନ ଅଭିଭିତ୍ତି ହେଉ ନା ଏବଂ କୋଣା କୋକାଣିକ ତେଜିକୁଳ ବ୍ୟଥାବ୍ୟ

ज्ञानामज्जनक आवृत्ति करुणे पात्रा। कोना अंतिक रुचि मूळ आम्रपाल अभया कम वज्रिति धूर्ण स्थान सेषान विहृत प्रविशन धूर्ण ग्रामपाल अथ० बालिज्जिकाण्डात् लाज्जनक नमू अग्न अमज्जन औपन कृष्ण सामू। कुशिम उपद्युष औ अग्न अष्टवृ ज्ञात निश्चाकाङ्क्षा अंतिमान कम्भमध्ये प्रविशन काले अग्नि रुचिकृत्यु उद्युक्ति शिखात् शोधुकास व्रुक्षावृ कृष्ण इस्तु। दृष्टदृष्टाते शिखि वा वेणुवृ अमृतापृष्ठ वृमहामृ अभया टेलिट्रेशन अग्न फेन्टे शोधुकास भ्यानुलकु व्रुक्षावृ कृष्ण इस्तु। मानवाश्चन्त्रावृ शिखन्ताल, क्षालकूलाटात् अथ० अलनामृ शोधुकास नामाना इस्तु।

4. देव ग्राम वा शोधु ग्राम की हृष्टिवृ ग्राम वा शोधु ग्राम उपमादानेव  
अंतिमिक अकृत्यु वर्णना दात्।

→ शोधु, शेन्जु हृष्टिवृ ग्राम उपमादानेव पृष्ठ उपेता उद्धिष्ठि प्राप्ति, रुचाक-जपिति वर्त्ति प्राप्ति  
अथ० नाला नदीवाद अवधीनादि अंतिमिक विशीत अवस्थामृ पाचनात् फलि उपेत ग्राम  
उपमें इस्तु। मोश्चं एव शोधुहिक उपमादान शोधु, अर्च इकु शोधु ग्राम वला  
इस्तु;

अर्च अकृत्यु हृष्टिवृ शेन्जु ग्राम उपमादानेव धीर्घि वानाना इस्तु। प्रकारि लिखन  
ट्राफिक शोधु अथ० अलनु लिखन उपेती कृष्ण अर्द्धेष्टात् नामा इस्तु। अंतिमिकृत्यु एकति  
अंतिमिक विशीत वक्तु कक्ष। मानुष अंतिमिक न्युक्तपृष्ठ पात्र ना अग्न अवात अनुवीव  
शोधु अलनु लिखनात् भचन अटामु अभया उपेत शेन्जु ग्राम उपमें  
कृष्ण। अमृत्यु भचित्यु अलन कम्भकारि निष्ठमृ अलाजन इस्तु अथ० लिखन, ३०२,  
शार्दुलिजन ओ शार्दुलिजन नालकार्त्ति ग्राम उपमें इस्तु। अंतिमिकृत्यु उपेत  
ग्राम ट्राफिक अर्च उपमादान अग्न इस्तु। पर्वत व्यथावैष्ट अनु नलनु जाथम्य  
अर्च ग्राम उपेत वातु नेत्रमा इस्तु।

5. देव ग्राम उपमादानेव शुद्धिगुलि लिखो ?

→ देव ग्रामि ७५% लिखन भाकामृ एति अति उपेत ग्रामानी। इस्तु दृष्टिवृ फलि  
देवमृ उपमें इस्तु ना अथ० कर्ति, कर्ति कम्भना वा कम्भनु अर्द्धेष्टात् पृष्ठ जारिमें वक्त  
देवाना उपेतात प्राप्ति अवस्थिष्ठि भाकृ ना। इस्तु नक्त भवनाज अति लिखी।  
आलाक अर्द्धेष्टात् देव ग्राम उपमादानेव कृष्ण इस्तु। उपेत ग्राम उपमें लिखन  
उपमिकृत्यु उपेत।

6. देव ग्राम उपमादानेव शीघ्रावद्वा उपलि लिखो ?

→ दामुक्तिक ग्रामाद्वयु शेन्जु अनुक शीघ्रावद्वा आद्वृ। अभग्नात् वामुक्तिकि  
सार्व फेलानात् शेन्जु अफल स्थानु प्राप्तन कृष्ण सामू सेषान अमृत्यु अंदिका०३५  
नामू वामुप्यावृ श्वाटि भाकृ। ट्राफिकानुवृ अमृत्युनीमृ तुक्ति वजामृ वृमेवृ  
अनु वाकृ प्रवाह्यु फेल अति अन्टामृ १५ किलिमृ अविक इस्तु अमृत्युन। वामुक्तिकि  
भाकृ स्थानु अनु दृष्टि प्रविशान स्थानु अवश्यक। अक फेलानुमृ दिष्ट्यु उपमादान  
चूर्व फेलाट्टु दृष्टिकृ अमृत्युन इस्तु। शरि भाकृ स्थानु अप्रमिकि अस्त्र॒ अतुल्य  
लिखी। अविकात् वामुक्तिकृ श्वाटि, श्वामुक्तिकृ, वातु उम्मानु अत  
प्रजातिक प्रविश्या श्वाटि अवस्थामृ भाकृ, अनुत्तर उपमिकृत्यु वृमेवृवृम्मावृम्मान॒ अमृत्युन।